सार संक्षेप

1. प्रस्तावित शोध का विषय–

"छत्तीसगढ़ राज्य वन–विकास निगम लिमिटेड का छत्तीसगढ़ राज्य के आर्थिक विकास में योगदान"

2. प्रस्तावना–

नवगठित छत्तीसगढ़ राज्य की स्थापना 1 नवंबर 2000 को हुई है। छत्तीसगढ़ राज्य का भौगोलिक क्षेत्रफल 1,35,224 वर्ग किलोमीटर है जो कि देश के क्षेत्रफल का 4.1 प्रतिशत है। प्रदेश का वन क्षेत्रफल लगभग 59772.389 वर्ग कि.मी. है, जो कि प्रदेश के भौगोलिक क्षेत्रफल का 44.2 प्रतिशत है। छत्तीसगढ़ राज्य वन क्षेत्रफल की दृष्टि से देश में तीसरे स्थान पर है। छत्तीसगढ़ वनों की दृष्टि से सम्पन्न राज्य है। राज्य में आरक्षित वन, संरक्षित वन और अवर्गीकृत वन है। इन वनों में मुख्यतः साल, बबूल, धबरा, तेंदु, टीक, महुआ, अंजन, और हर्रा के वृक्ष है। यह अच्छी लकड़ी के स्त्रोत है। वन किसी भी राष्ट्र की अति मूल्यवान संपदा होते है।

छत्तीसगढ़ राज्य वन–विकास निगम लिमिटेड का गठन मुख्य रूप से जैव विविधता एवं वित्तीय दृष्टिकोण से वन क्षेत्रों को उत्कृष्ट बनाने हेतु मानव निर्मित वन विकसित करने वन विभाग के सहयोग एवं आयोग की सिफारिश के आधार पर राज्य के विभाजन के बाद छत्तीसगढ़ राज्य वन विकास निगम के रूप में हुई है। इसके अंतर्गत हम निगम का गठन, स्थापना, उद्‌देश्य, पूँजीगत संरचना, परियोजना मंडल, एवं आर्थिक विश्लेपण का अध्ययन करेगें।

छत्तीसगढ़ राज्य वन विकास निगम लिमिटेड के अतंर्गत बारनवापारा परियोजना मंडल, पानाबरस परियोजना मंडल, कोटा परियोजना मंडल, अंतागढ़ परियोजना मंडल, कवर्धा परियोजना मंडल, सरगुजा, मनेन्द्रगढ़ औद्योगिक वृक्षारोपण परियोजना मंडल का अध्ययन करेगें। इस निगम की स्थापना का मुख्य उद्‌देश्य बहुमूल्य वन प्रजातियों का रोपण करना, खान क्षेत्रों के पूनर्वास हेतु मिश्रित प्रजातियों का रोपण करना, बिगड़े वन क्षेत्रों में सागौन, बॉस एवं अन्य मिश्रित प्रजाति के पौधों का रोपण करना एवं वन क्षेत्रों में जैव विविधता को बनाये रखना वन्य – प्राणी वर्ग का रख–रखाव संरक्षण एवं विकास करना है। छत्तीसगढ़ राज्य वन विकास निगम द्वारा संचालित परियोजनाएँ, सागौन व बॉस का रोपण, बिगड़े वनों का सुधार एवं विभिन्न शासकीय उपक्रमों व सस्थाओं हेतु रोपण करना शामिल है।

छत्तीसगढ़ राज्य वन विकास निगम लिमिटेड द्वारा औद्योगिक – इकाईयों के क्षेत्रों में समस्त रोपण कार्य करने के लिए निगम को एजेन्सी के रूप में अधिकृत किया गया है। प्रदेश की बारहमासी नदियों के तटों पर भू–क्षरण रोकने एवं नदियों में पानी के बहाव को बनाये रखने के उद्देश्य से नदी तट वृक्षारोपण योजना लागू की गई है। इस प्रकार छत्तीसगढ़ राज्य वन विकास निगम लिमिटेड द्वारा संचालित विभिन्न योजनाओं से राज्य को आर्थिक, प्राकृतिक, सामाजिक एवं राष्ट्रीय–लाभ मिल रहा है।

3. चयनित विषय में पूर्व शोध का संक्षिप्त सिंहाक्लोकन–

छत्तीसगढ़ में वनों पर पूर्व में कुछ शोध हुए है उसका विवरण निम्न है–

Title - Forest resources of Chhattisgarh region and their development planning.
(Mahavir Prasad Gupta 15-Nov-2011)

Title - Ethnobotany in relation to health and livelihood secutity in district Bastar of Chhattisgarh state
Mithlesh Kumar Sinha (30-Apr-2012)

Title - Management information systems in libraries : with special reference to university libraries of chhattisgarh
Mohammed Intiaz Ahmed (15-Nov-2011)

Title - Women leadership and rempowerment: a social and economic analaysis (with special reference to Chhattisgarh State)
Babulal Agrawal (30-Apr-2012)

4. शोध अध्ययन का उद्देश्य –

किसी भी शोध को करने के पीछे इसका मुख्य उद्देश्य किसी न किसी कारण को खोजना होता है। इस विषय के चयन या अध्ययन का मुख्य उद्देश्य छत्तीसगढ़ राज्य वन विकास निगम लिमिटेड की कार्य प्रणाली का अध्ययन कर उसकी वर्तमान आर्थिक स्थिति को स्पष्ट करना है तथा वन विभाग ''राज्य की वन संपदा एवं जैव विविधिता को'' वर्तमान एवं भावी पीढ़ी के बहुआयामी उपयोग हेतु संरक्षित रखने एवं संवर्धन के लिए कृत संकल्पित है। इसलिए वनों के बचाव के लिए जन सामान्य में जागरूकता लाना है।

1. छत्तीसगढ़ राज्य वन विकास निगम लिमिटेड की कार्य – प्रणाली एवं आर्थिक स्थिति का अध्ययन करना।

2. वनों के संरक्षण एवं सवंर्धन को प्रोत्साहित करना।

3. छत्तीसगढ़ वन विकास निगम लिमिटेड द्वारा संचालित विभिन्न परियोजनाओं का अध्ययन करना।

4. इस निगम के उच्च तकनीक वृक्षारोपण, बिगड़े वनों का सुधार, सागौन तथा बांस का रोपण मिश्रित–प्रजातियों का रोपण आदि कार्यो का मूल्यांकन करना।

5. इस निगम के रोजगार सृजन, भविष्य की योजनाएं, वृक्ष सहकारिता परियोजना आदि का अध्ययन करना।

6. वनो के संरक्षण एवं संवर्धन हेतु विभिन्न योजनाएं क्रियान्वित करना एवं क्रियान्वित योजनाओं की समीक्षा करना।

5. प्रस्तावित कार्य – क्षेत्र में सहयोगी क्षेत्र–

स्व. पं. जवाहरलाल नहेरू का कथन है – ''उगता हुआ वृक्ष प्रगतिशील राष्ट्र का प्रतीक है।'' इस संदर्भ में चटरबक लिखते है, वन राष्ट्रीय सम्पदा है तथा किसी राष्ट्र के विकास के लिए वनों की नितान्त आवश्यकता है। यह केवल ईधन की लकड़ी ही प्रदान नहीं करते– वरन् एक बडी संख्या में कच्चा माल तथा राष्ट्र की आय के स्त्रोत भी है।'' छत्तीसगढ़ प्रदेश असम के बाद दूसरा सर्वाधित वन क्षेत्र वाला प्रदेश है। यहां की अर्थव्यवस्था प्रत्यक्ष एवं परोक्ष रूप से वनों से लाभान्वित है।

1. वनों से विभिन्न प्रकार के कन्दमूल फल–फूल तथा बीज स्थानीय लोगों के भोज्य पदार्थ के रूप में उपयोग में आते है।

2. वन में कई प्रकार के औषधीय वृक्ष, घास एवं लताएं मिलती है जिनके जड़ी–बुटी, फल–फूल, छाल, पत्ती, बीज आदि से अनेकानेक आयुर्वेदिक दवाईयां का निर्माण किया जाता है।

3. वनों से उद्योगों के लिए कच्चे माल की प्राप्ति होती है। कागज, लाख, बीड़ी, कोसा, माचिस, अगरबत्ती आदि उद्योग वन पर ही आश्रित होते है।

4. भारतीय अर्थव्यवस्था में पशुओं का महत्वपूर्ण योगदान रहता है और पशुओं के लिए वनों से चारा प्राप्त होता है।

5. प्रदेश के वनों से प्रतिवर्ष लगभग 10 करोड़ रूपये के बहुमूल्य पदार्थ निर्यात हेतु प्राप्त होते है।

6. वनों का उपयोग करने से राजस्व एवं रॉयल्टी के रूप में प्रतिवर्ष सरकार को 50 करोड़ रूपये से अधिक की पूंजी प्राप्त होती हैं।

7. पारिस्थितिक–संतुलन बनाये रखने में वनों का होना अनिवार्य हैं।

8. कुल जैव विविधता के संरक्षण के लिए राष्ट्रीय उद्यानों अभ्यारण्यों, जीव मंडल रिजर्व तथा अन्य संरक्षित क्षेत्रों को मजबूत करना और इनका पर्याप्त रूप से विस्तार करना।

6. प्रस्तावित शोध – प्रविधि –

शोध – प्रविधि के अंतर्गत सर्वप्रथम हम शोध का अर्थ समझेंगे।

शोध से आशय–

मानव एक जिज्ञासु प्राणी हैं। उसमें प्रकृति को समझने एवं अपनी समस्याओं के समाधान के लिए हमेशा प्रयास किया है। शोध का अर्थ सामाजिक घटनाओं या विद्यमान सिद्धांतों के संबंध में नवीन ज्ञान की प्राप्ति के लिए प्रयोग में लाई गई वैज्ञानिक पद्धति सामाजिक शोध है। पी.वी.यंग के शब्दों में – ''सामाजिक शोध एक वैज्ञानिक योजना है जिसका उद्देश्य तार्किक तथा क्रमबद्ध पद्धतियों के द्वारा नवीन तथ्यों का अन्वेषण अथवा पुराने तथ्यों की पुनः परीक्षा तथा उनमें पाए जाने वाले अनुक्रमों, अन्तः सम्बन्धों कारण सहित व्याख्याओं तथा उनको संचालित करने वाले स्वाभाविक नियमों का विश्लेषण करना है।''

शोध – प्रविधि –

शोध–प्रविधि अपने आप ही शोध से संबंधित समस्या से उत्पन्न हो जाती है। शोध – प्रविधि का चुनाव करते समय केवल शोध विधि को ही नहीं बल्कि शोध की समस्या को भी ध्यान में रखना चाहिए। यह जानकारी शोधकर्ता को अवश्य होनी चाहिए कि वह कारणों का मूल्यांकन किस प्रकार शोध – कठिनाईयों के साथ करें।

ऑकड़ों के संग्रहण का स्त्रोंत–

अध्ययन कार्य के सम्पादन के लिए आवश्यकतानुसार प्राथमिक एवं द्वितीयक दोनों प्रकार के ऑकड़ों का संकलन किया गया है। ऑकड़ों के संकलन के समय आवश्यक सावधानियों को भी महत्व दिया गया है। ऑकड़ों का विश्लेषण कर उनके आधार पर उद्देश्यों के अनुरूप निष्कर्षो तक पहुँचने का प्रयास किया गया है। इस शोध में प्रश्नावली, सांख्यिकी एवं लेखांकन की तकनीकियों का आवश्यकतानुसार प्रयोग किया गया है। तथा समय – सीमा को ध्यान में रखते हुए 2003–04 से 2012–13 तक के आकडों का ही अध्ययन किया गया है।

7. प्रस्तावित शोध कार्य के अपेक्षित निर्गम–

उपकल्पना या प्राकल्पना वैज्ञानिक अनुसंधान का अत्यंत महत्वपूर्ण चरण है। शोध या अनुसंधान शुरू करने से पहले अनुसंधान के कारणों और परिणामों के बारे में शोधकर्त्ता जो एक निश्चित अवधारणा बना लेता है, उसे ही प्राक्कल्पना या उपकल्पना कहते है।

गुडे तथा हॉट के अनुसार –

''प्राक्कल्पना इस बात का वर्णन करती है कि हम आगे क्या देखना चाहते है। एक प्राक्कल्पना भविष्य की ओर देखती है। यह एक प्रस्तावना है जिसकी प्रामाणिकता सिद्ध करने हेतु उसका परीक्षण किया जा सकता है। यह सही भी सिद्ध हो सकती है और गलत भी।''

इस शोध '' छत्तीसगढ़ राज्य वन विकास निगम लिमिटेड का आर्थिक विश्लेषण 2003–04 से 2012–13 तक ''का अध्ययन में यह धारणा बनाई गई है कि इस निगम ने अपनी स्थापना के उद्देश्यों को पूर्ण रूपों से पुरा किया है तथा यह निगम निरन्तर अधिक लाभ की ओर अग्रसर हो रहा है। इसकी आर्थिक स्थिति सुदृढ़ है।

8

8.

संदर्भ ग्रंथ सूची

अ. पुस्तकें –

क्रं.	लेखक का नाम	विषय का नाम	प्रकाशक	वर्ष
1	डॉ. कमलेश संतराम	छत्तीसगढ़ की भौगोलिक समीक्षा	वसुन्धरा प्रकाशन (गोरखपुर)	2002
2	डॉ. तिवारी विजय कुमार	छत्तीसगढ़ एक भौगोलिक अध्ययन	हिमालया पब्लिसिंग हॉऊस	2001
3	संपादक मंडल प्रतियोगिता– साहित्य सीरिज	प्रतियोगिता साहित्य छत्तीसगढ़ एक अध्ययन	प्रतियोगिता साहित्य	2004
4.	गौतम शिवानंद	भूगोल – तृतीय वर्ष	राम–प्रसाद एंड संस	2005–06
5.	प्रधान संपादक– श्री सुरजन ललित	संदर्भ छत्तीसगढ़	देशबन्धु प्रकाशन विभाग	2005
6.	श्री त्रिपाठी संजय श्रीमती त्रिपाठी चंदन	उपकार छत्तीसगढ़ वृहद् संदर्भ	साहित्य भवन पब्लिकेशन	2002–03

ब. प्रशासनिक प्रतिवेदन एवं अन्य पुस्तकें –

1. छत्तीसगढ़ शासन वन विभाग, वार्षिक प्रशासनिक प्रतिवेदन (2003–04)।
2. छत्तीसगढ़ राज्य वन विकास निगम लिमिटेड, वार्षिक प्रतिवेदन (2004–05)।
3. छत्तीसगढ़ विकास का मुक्तांकाश ।
4. शोध-प्रविधि – पं. रविन्द्रनाथ मुखर्जी।

स. समाचार पत्र – पत्रिकाएं –

1. नवभारत ।
2. दैनिक भास्कर ।
3. हरिभूमि ।

द. इंटरनेट वेबसाइट्स –

1. www.cgrvvn.nic.in
2. www.cgforest.nic.in

निर्देशक के हस्ताक्षर	सह-निर्देशक के हस्ताक्षर	शोधार्थी
डॉ. मधुलिका अग्रवाल	डॉ. एस.एस. खनुजा	दिव्या शुक्ला
विभागाध्यक्ष, वाणिज्य-विभाग	प्राचार्य	सहा. प्राध्यापक
शास.ई.पी.जी.महा.वि.कोरबा (छ.ग.)	दुर्गा महाविद्यालय, रायपुर (छ.ग.)	दुर्गा महाविद्यालय, रायपुर (छ.ग.)

Prof. MADHULIKA AGRAWAL
H.O.D. Commerce
Govt. E.V.P.G College, KORBA

FORWARDED
अध्यक्ष
(डॉ. आर.सी.)
दुर्गा महा. रायपुर (छ.ग.)
CHAIRMAN DRC